29-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

**“मीठे बच्चे - तुम सच्चे-सच्चे राजऋषि हो, तुम्हारा कर्तव्य है तपस्या करना, तपस्या से ही पूजन लायक बनेंगे"**

**प्रश्नः-** **कौन-सा पुरुषार्थ सदाकाल के लिए पूजने लायक बना देता है?**

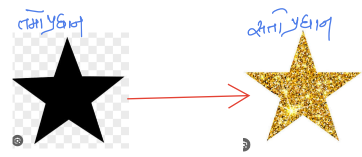

**उत्तर:-** आत्मा की ज्योति जगाने वा तमोप्रधान आत्मा को सतोप्रधान बनाने का पुरुषार्थ करो तो सदाकाल के लिए पूजन लायक बन जायेंगे। जो अभी ग़फलत करते हैं वह बहुत रोते हैं। अगर पुरुषार्थ करके पास नहीं हुए, धर्मराज की सज़ायें खाई तो सज़ा खाने वाले पूजे नहीं जायेंगे। सज़ा खाने वाले का मुँह ऊंचा नहीं हो सकता।

**ओम् शान्ति।** रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझा रहे हैं। पहले-पहले तो बच्चों को समझाते

हैं कि अपने को आत्मा निश्चय करो। पहले आत्मा है, पीछे शरीर है। जहाँ-तहाँ प्रदर्शनी अथवा म्युज़ियम में, क्लास में पहले-पहले यह सावधानी देनी है कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बच्चे जब बैठते हैं, सब देही-अभिमानी होकर नहीं बैठते हैं। यहाँ बैठते भी कहाँ-कहाँ ख्यालात जाते हैं। सतसंग में जब तक कोई साधू

आदि आये तब तक क्या बैठ करते हैं। कोई न कोई ख्यालात में बैठे रहते हैं। फिर साधू आया तो कथा आदि सुनने लगते हैं। बाप ने समझाया है - यह सब भक्ति मार्ग में सुनना-सुनाना है। बाप समझाते हैं यह सब है - आर्टिफिशियल। इनमें है कुछ भी नहीं। दीपमाला भी आर्टिफिशियल मनाते

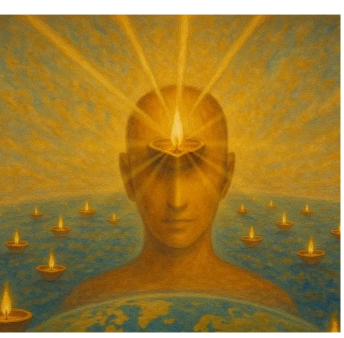

हैं। बाप ने समझाया है - ज्ञान का तीसरा नेत्र खुलना चाहिए तो घर-घर में सोझरा हो। अभी तो घर-घर में अन्धियारा ही है। यह सब बाहर का प्रकाश है। तुम अपनी ज्योति जगाने बिल्कुल शान्त में बैठते हो। बच्चे जानते हैं स्वधर्म में रहने से पाप कट जाते हैं। जन्म-जन्मान्तर के पाप इस याद की यात्रा से ही कटते हैं। आत्मा की ज्योत

बुझ गई है ना। शक्ति का पेट्रोल सारा खत्म हो गया है। वह फिर भर जायेगा क्योंकि आत्मा पवित्र बन जाती है। कितना रात-दिन का फ़र्क है। अब लक्ष्मी की कितनी पूजा होती है। कई बच्चे लिखते हैं लक्ष्मी बड़ी या सरस्वती माँ बड़ी। लक्ष्मी तो एक होती है - श्री नारायण की। अगर महालक्ष्मी को पूजते हैं तो उनको 4 भुजा दिखाते हैं। उसमें दोनों आ जाते हैं। वास्तव में उसको लक्ष्मी-नारायण की पूजा कहा जाए। चतुर्भुज है ना - दोनों इकट्ठे। परन्तु मनुष्यों को कुछ भी समझ नहीं है। बेहद का बाप कहते हैं कि सभी बेसमझ बन पड़े हैं। लौकिक बाप कभी सारी दुनिया के बच्चों को कहेंगे क्या कि बेसमझ हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो - विश्व का बाप कौन है? खुद कहते हैं मैं सभी आत्माओं का बाप हूँ। तुम सब मेरे बच्चे हो। वो साधू लोग तो कह देंगे सब भगवान ही भगवान हैं। तुम जानते हो बेहद का बाप बेहद का ज्ञान समझा रहे हैं हम आत्माओं को। मनुष्यों को तो देह-अभिमान रहता है - मैं फलाना हूँ......। शरीर पर जो नाम पड़ा है, उस पर चलते आये हैं। अब

*How lucky and Great we are...!*

समझा?

29-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

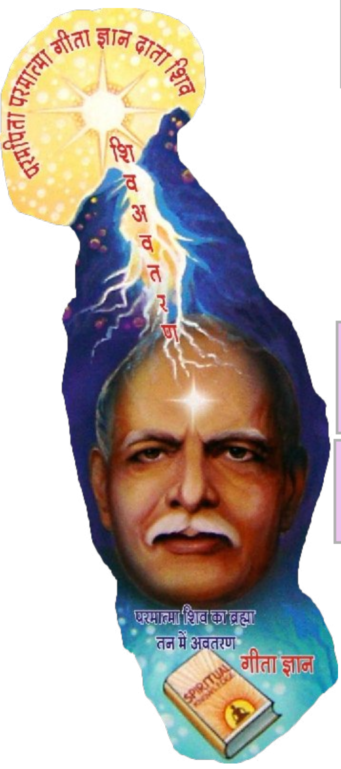


शिवबाबा तो है निराकार, सुप्रीम सोल। उस आत्मा पर नाम है शिव। आत्मा पर नाम एक ही शिवबाबा का है। बस वह है परम आत्मा, परमात्मा, उनका नाम है शिव। बाकी जो भी आत्मायें ढेर की ढेर हैं उन सबके शरीरों के नाम पड़े हुए हैं। शिवबाबा यहाँ रहता नहीं है, वह तो परमधाम से आते हैं। शिव अवतरण भी है। अभी बाप ने तुमको समझाया है - सभी आत्मायें यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। बाप का भी पार्ट है। बाप तो बहुत बड़ा काम यहाँ करते हैं। अवतार मानते हैं तो उनकी तो हॉलीडे और स्टैम्प आदि होनी चाहिए। सब देशों में हॉली डे होनी चाहिए क्योंकि बाप तो सबका सद्गति दाता है ना। उनका जन्म दिन और चले जाने का दिन, डेट आदि का भी पता नहीं पड़ सकता क्योंकि यह तो न्यारा है ना इसलिए सिर्फ शिवरात्रि कह देते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो - आधाकल्प है बेहद का दिन, आधाकल्प है बेहद की रात। रात पूरी होकर फिर दिन होता है। उसके बीच में बाप आते हैं। यह तो एक्यूरेट टाइम है। मनुष्य जन्मते हैं तो म्युनिस्पाल्टी में नोट करते हैं

Birth Registration

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ना, फिर 6 दिन के बाद उसका नाम रखते हैं, उसको कहते हैं - नामकरण। कोई छठी कहते। भाषायें तो बहुत हैं ना। लक्ष्मी की पूजा करते हैं - आतिशबाजी जलाते हैं। तुम पूछ सकते हो जो लक्ष्मी का त्योहार आप मनाते हो, यह कब तख्त पर बैठी? तख्त पर बैठने का ही कारोनेशन मनाते हैं, उनका जन्म नहीं मनाते। लक्ष्मी का चित्र थाली में रख उनसे धन मांगते हैं। बस और कुछ नहीं। मन्दिर में जाकर भल कुछ मांगेंगे, परन्तु दीपमाला के दिन तो उनसे सिर्फ पैसा मांगेंगे। पैसा देती थोड़ेही है। यह जैसी-जैसी भावना है... अगर कोई सच्ची भावना से पूजा करते तो अल्प-काल के लिए धन मिल सकता है। यह है ही अल्पकाल का सुख। कहाँ तो स्थाई सुख भी होगा ना। स्वर्ग का तो उन्हों को पता ही नहीं है। यहाँ स्वर्ग की भेंट में कोई खड़ा हो नहीं सकता।

No comparison At All

**यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।**
**तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥**

जो-जो सकाम भक्त जिस-जिस देवताके स्वरूपको श्रद्धासे पूजना चाहता है, उस-उस भक्तकी श्रद्धाको मैं उसी देवताके प्रति स्थिर करता हूँ॥ २१॥

**स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।**
**लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्॥**

वह पुरुष उस श्रद्धासे युक्त होकर उस देवताका पूजन करता है और उस देवतासे मेरे द्वारा ही विधान किये हुए उन इच्छित भोगोंको निःसन्देह प्राप्त करता है॥ २२॥ The ultimate source

**अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।**
**देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि॥**

* अध्याय ७ * १०५

समझा?

परन्तु उन अल्प बुद्धिवालोंका वह फल नाशवान् है तथा वे देवताओंको पूजनेवाले देवताओंको प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त चाहे जैसे ही भजें, अन्तमें वे मुझको ही प्राप्त होते हैं॥ २३॥

तुम जानते हो आधाकल्प है ज्ञान, आधाकल्प है

भक्ति। फिर होता है वैराग्य। समझाया जाता है - यह पुरानी छी-छी दुनिया है इसलिए फिर नई दुनिया जरूर चाहिए। नई दुनिया वैकुण्ठ को कहते हैं, उसको हेविन, पैराडाइज़ कहा जाता है। इस ड्रामा में पार्टधारी भी अविनाशी हैं। तुम बच्चों को मालूम पड़ा है कि हम आत्मा पार्ट कैसे बजाती हैं।

बाबा ने समझाया है - किसको भी प्रदर्शनी आदि दिखाना है तो पहले-पहले यह एम ऑब्जेक्ट समझानी है। सेकण्ड में जीवनमुक्ति कैसे मिलती है - जन्म-मरण में तो जरूर आना ही है। तुम सीढ़ी पर बहुत अच्छी रीति समझा सकते हो।

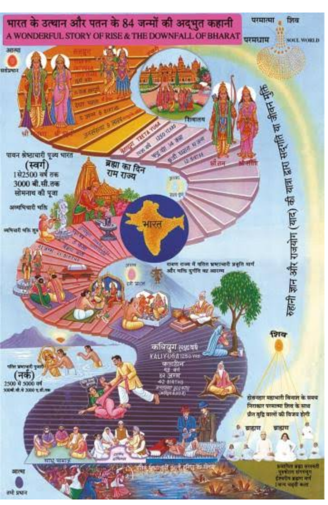

रावणराज्य में ही भक्ति शुरू होती है। सतयुग में भक्ति का नाम-निशान नहीं होता। ज्ञान और भक्ति दोनों अलग-अलग हैं ना। अभी तुमको इस पुरानी दुनिया से वैराग्य है। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया अब खत्म होनी है। बाप सदैव बच्चों के सुखदाई ही होते हैं। बच्चों के लिए ही बाप कितना माथा मारते हैं। बच्चे के लिए ही गुरूओं के पास जाते हैं, साधुओं के पास जाते हैं - कैसे भी करके बच्चा हो क्योंकि समझते हैं बच्चा होगा तो उनको

मिलकियत देकर जायेंगे। बच्चा हो तो उनको हम वारिस बनायें। तो बाप कभी बच्चों को दु:ख थोड़ेही देंगे। इम्पॉसिबुल है। तुम मात-पिता कहकर कितनी रड़ियाँ मारते रहते हैं। तो बच्चों का रूहानी बाप सबको सुख का ही रास्ता बताते हैं। सुख देने वाला एक ही बाप है। दु:ख हर्ता सुख कर्ता एक रूहानी बाप है। यह विनाश भी सुख के लिए ही है। नहीं तो मुक्ति-जीवनमुक्ति कैसे पायेंगे? परन्तु यह भी कोई समझेंगे थोड़ेही। यहाँ तो यह हैं गरीब, अबलायें, जो अपने को आत्मा निश्चय कर सकती। बाकी बड़े लोगों को देह का अभिमान इतना कड़ा पक्का हो गया है जो बात मत पूछो। बाबा बार-बार समझाते हैं - तुम राजऋषि हो। ऋषि हमेशा तपस्या करते हैं। वह तो ब्रह्म को, तत्व को याद करते हैं या कोई काली आदि को भी याद करते होंगे। बहुत संन्यासी भी हैं जो काली की पूजा करते हैं। माँ काली कह पुकारते हैं। बाप कहते हैं - इस समय सब विकारी हैं। काम चिता पर बैठ सब काले हुए हैं। माँ, बाप, बच्चे सब काले हैं। यह बेहद की बात है। सतयुग में काले होते नहीं,

29-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

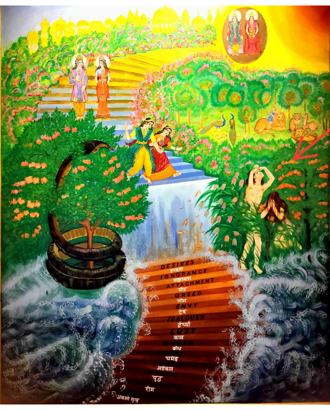

सब हैं गोरे। फिर कभी सांवरे बनते हैं। यह तुम बच्चों को बाप ने समझाया है। थोड़ा-थोड़ा पतित होते-होते अन्त में बिल्कुल ही काले हो जाते हैं। बाप कहते हैं रावण ने काम चिता पर चढ़ाए बिल्कुल काला बना दिया है। अब फिर तुमको ज्ञान चिता पर चढ़ाता हूँ। आत्मा को ही पवित्र बनाना होता है। अब पतित-पावन बाप आकर पावन बनने की युक्ति बताते हैं। पानी क्या युक्ति बतायेंगे। परन्तु तुम किसको समझाओ तो कोटों में कोई ही समझकर ऊंच पद पाते हैं। अभी तुम बाप से अपना वर्सा लेने आये हो - 21 जन्मों के लिए। तुम आगे चलकर बहुत साक्षात्कार करेंगे। तुमको अपनी पढ़ाई का सब पता पड़ेगा। जो अभी ग़फलत करते हैं फिर बहुत रोयेंगे। सज़ायें भी तो बहुत होती हैं ना। फिर पद भी भ्रष्ट हो जाता है। मुंह ऊंचा कर नहीं सकेंगे इसलिए बाप कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चों, पुरुषार्थ कर पास हो जाओ, जो कुछ भी सज़ा नहीं खानी पड़े तब पूजन लायक भी बनेंगे। सज़ा खाई तो फिर थोड़ेही पूजे जायेंगे। तुम बच्चों को पुरुषार्थ बहुत करना चाहिए। अपनी

Exclusive Authority of Shiv baba

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥

हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३॥ Adhyay 7

Coming soon...

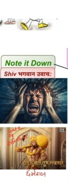


अभिमानी बनो। देह को भूल जाना है। पिछाड़ी में तुम बहुत कोशिश करने लग पड़ेंगे, अभी तुम समझते नहीं हो। पिछाड़ी में बहुत-बहुत पछतायेंगे। बाबा साक्षात्कार भी करायेंगे। यह-यह पाप किये हैं। अब खाओ सज़ा। पद भी देखो। शुरू में भी ऐसे साक्षात्कार करते थे फिर पिछाड़ी में भी साक्षात्कार करेंगे। 05/09/25

Shiv भगवान उवाच:
Take it Seriously..

Refer last page for similar points "Result out"

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

29-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

आत्मा की ज्योति जगानी है। अभी आत्मा तमोप्रधान बनी है, उनको ही सतोप्रधान बनाना है। आत्मा है ही बिन्दी। एक सितारा है। उनका और कोई नाम रख नहीं सकते। बच्चों को समझाया है उनका साक्षात्कार हुआ है। स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस का बतलाते हैं। उसने देखा उनसे कुछ लाइट निकली सो तो आत्मा ही निकलती है। उसने समझा वह मेरे में समा गई। अब आत्मा कोई आकर समा थोड़ेही सकती है। वह तो जाकर दूसरा शरीर लेती है। पिछाड़ी में तुम बहुत देखेंगे। नाम और रूप से न्यारी कोई चीज़ होती नहीं। आकाश पोलार है, उनका भी नाम है। अब यह तो बच्चे समझते हैं, कल्प-कल्प स्थापना जो होती आई है वह होनी ही है। हम ब्राह्मण नम्बरवार पुरुषार्थ करते रहते हैं। जो-जो सेकेण्ड गुजरता है उसको ड्रामा ही कहा जाता है। सारी दुनिया का चक्र फिरता रहता है। यह 5 हजार वर्ष का चक्र, जूँ मिसल फिरता रहता है। टिक-टिक होती रहती है, अभी तुम मीठे-मीठे बच्चों को सिर्फ बाप को ही याद करना है। चलते-फिरते काम

बीत जाने के बाद Drama कहेंगे...

ये पक्का समझ लो..

पहले नहीं...

(e.g. जो drama में होगा)

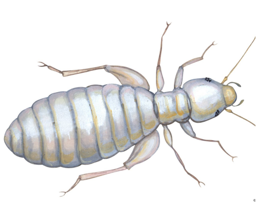

Points: मामेकम/ Only Me mp.

करते बाप को याद करने में ही कल्याण है। फिर माया चमाट लगा देगी। तुम हो ब्राह्मण, भ्रमरी मिसल कीड़े को आपसमान ब्राह्मण बनाना है। वह भ्रमरी का तो एक दृष्टान्त है। तुम हो सच्चे-सच्चे ब्राह्मण। ब्राह्मणों को ही फिर देवता बनना है इसलिए तुम्हारा यह है पुरुषोत्तम बनने के लिए संगमयुग। यहाँ तुम आते ही हो पुरुषोत्तम बनने के लिए। पहले ब्राह्मण जरूर बनना पड़े। ब्राह्मणों की चोटी है ना। तुम ब्राह्मणों को समझा सकते हो। बोलो, तुम ब्राह्मणों का तो कुल है, ब्राह्मणों की राजधानी नहीं है। तुम्हारा यह कुल किसने स्थापन किया? तुम्हारा बड़ा कौन है? फिर तुम जब समझायेंगे तो बहुत खुश होंगे। ब्राह्मणों को मान देते हैं क्योंकि वह शास्त्र आदि सुनाते हैं। पहले राखी बांधने के लिए भी ब्राह्मण जाते थे।

आजकल तो बच्चियां जाती हैं। तुमको तो राखी उनको बांधनी है जो पवित्रता की प्रतिज्ञा करें। प्रतिज्ञा जरूर करनी पड़े। भारत को फिर से पावन बनाने लिए हम यह प्रतिज्ञा करते हैं। तुम भी पावन बनो, औरों को भी पावन बनाओ। और किसकी

**Exclusive Authority of Shiv baba**

ताकत नहीं जो ऐसे कह सके। तुम जानते हो यह अन्तिम जन्म पावन बनने से हम पावन दुनिया के मालिक बनते हैं। तुम्हारा धंधा ही यह है। ऐसे मनुष्य कोई होते ही नहीं। तुमको जाकर यह कसम उठवाना है। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है, इस पर विजय पानी है। इस पर जीत पाने से ही तुम जगतजीत बनेंगे। इन लक्ष्मी-नारायण ने जरूर आगे जन्म में पुरुषार्थ किया है तब तो ऐसा बने हैं ना। अभी तुम बता सकते हो - किस कर्म से इनको यह पद मिला, इसमें मूंझने की तो कोई बात ही नहीं। तुमको कोई इस दीपमाला आदि की खुशी नहीं है। तुमको तो खुशी है - हम बाप के बने हैं, उनसे वर्सा पाते हैं। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितना खर्चा करते हैं। कितने नुकसान भी हो जाते हैं। आग लग जाती है। परन्तु समझते नहीं।

**Most imp**

**How Great we are...!**

इसको छोटी बात मत समझो।

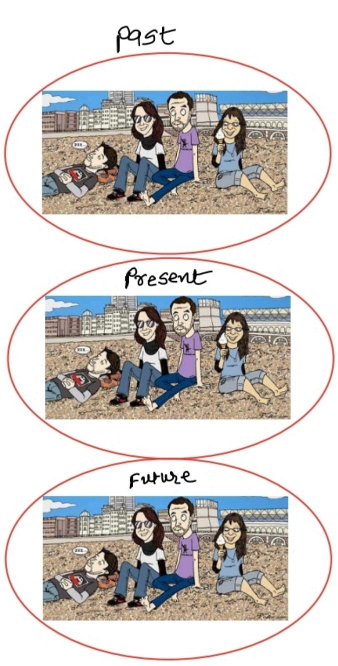


तुम जानते हो अभी हम फिर से अपने नये घर जाने वाले हैं। चक्र फिर हूबहू रिपीट होगा ना। यह

Hence, "De ja vu" mystery solved.

**29-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन**

कापारी खुशी

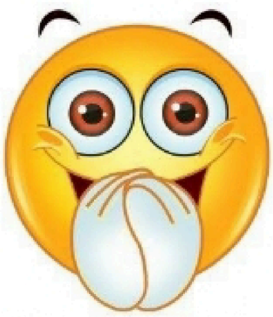

बेहद की फिल्म है। बेहद का स्लाइड है। बेहद बाप के बने हैं तो कापारी खुशी होनी चाहिए। हम बाप से स्वर्ग का वर्सा जरूर लेंगे। बाप कहते हैं पुरुषार्थ से जो चाहिए सो लो। पुरुषार्थ तुमको जरूर करना है। पुरुषार्थ से ही तुम ऊंच बन सकते हो। यह बाबा (बूढ़ा) इतना ऊंच बन सकते हैं तो तुम क्यों नहीं बन सकते हो। अच्छा!

**पुछो अपने आप से...**

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

**मेरे मीठे ते मीठे बाबा...**

**धारणा के लिए मुख्य सार:-**

1) जैसे बाप सदा बच्चों के प्रति सुखदाई है, ऐसे सुखदाई बनना है। सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताना है।

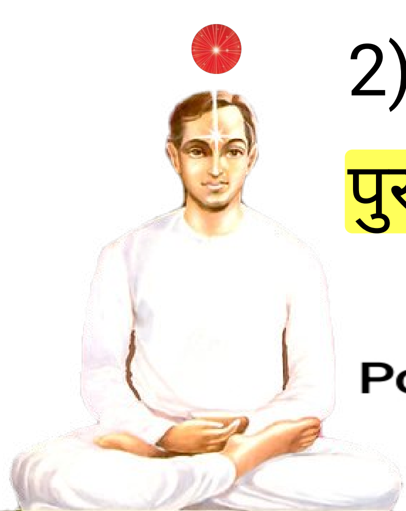

2) देही-अभिमानी बनने की तपस्या करनी है। इस पुरानी छी-छी दुनिया से बेहद का वैरागी बनना है।

**Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.**

29-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

## वरदान:-

Method/Process/Instrument

**हर एक की विशेषता को स्मृति में रखते हुए फेथफुल बन एकमत संगठन बनाने वाले सर्व के शुभचिंतक भव**

Outcome/Output/Result Finale Achievement

Shiv भगवान उवाच:

विशेषता देखने वाला चश्मा

ड्रामा अनुसार हर एक को कोई न कोई विशेषता अवश्य प्राप्त है, उस विशेषता को कार्य में लगाओ तथा औरों की विशेषता को देखो।

imp to understand

Input output

एक दो में फेथफुल रहो तो उनकी बातों का भाव बदल जायेगा। जब हर एक की विशेषता को देखेंगे तो अनेक होते भी एक दिखाई देंगे। एकमत संगठन हो जायेगा।

कोई किसके ग्लानी की बात सुनाये तो उसे टेका देने के बजाए सुनाने वाले का रूप परिवर्तन कर दो, तब कहेंगे शुभचिंतक।

Definition of

**स्लोगन:-** श्रेष्ठ संकल्प का खजाना ही श्रेष्ठ प्रालब्ध वा ब्राह्मण जीवन का आधार है।

29-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

## अव्यक्त इशारे -

# अशरीरी व विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ

*May I have your Attention Please..!*

Don't take it easy...

अगर सेकण्ड में विदेही बनने का अभ्यास नहीं होगा तो लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी

और जिस बात में कमजोर होंगे, चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमण्डल के प्रभाव में,

जिस बात में कमजोर होंगे, उसी रूप में जानबूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी इसीलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत जरूरी है।

***Take it Seriously..***

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

# फाइनल पेपर

73 इन दादियों की आपस में बहुत अन्दरूनी प्रीति है, आप लोगों को पता नही है इसलिए समझते हो अभी क्या होगा। एक दीदी ने यह साबित कर दिखाया कि हम सभी आदि रत्न एक है। दिखाया ना? ब्रह्मा बाप के बाद साकार रूप में 9

दीदी मनमोहिनी 28/07/1983 (old costume left)

रत्नों की पूज्य आत्मायें सेवा की स्टेज पर प्रत्यक्ष हुई तो 9 रत्न वा आठ की माला सदा एक दो के सहयोगी हैं। कौन हैं आठ की माला? जो ओटे सेवा में वह अर्जुन अर्थात् अष्ट माला है। तो सेवा की स्टेज पर अष्ट रत्न, 9 रत्न अपना पार्ट बजा रहे हैं। और पार्ट बजाना ही अपना पार्ट वा अपना नम्बर प्रत्यक्ष करना है। बापदादा ऐसे नम्बर नहीं देंगे लेकिन पार्ट ही प्रत्यक्ष कर रहा है। तो अष्ट रत्न हैं - आपस में सदा के स्नेही और सदा के सहयोगी। इसलिए सदा आदि से सेवा के सहयोगी आत्मायें सदा ही सहयोग का पार्ट बजाती रहेंगी। समझा। और क्या क्वेश्चन है? बताया क्यों नहीं, यह क्वेश्चन है? बतलाते तो दीदी के योगी बन जाते। ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता है। हलचल का पेपर अचानक होता है। और अभी भी इस विशेष आत्मा का पार्ट, अभी तक जो आत्मायें गई हैं, उन्हों से न्यारा और प्यारा है। हर एक क्षेत्र में इस श्रेष्ठ आत्मा का साथ, सहयोग की अनुभूति करते रहेंगे। ब्रह्मा बाप का अपना पार्ट है, उन जैसा पार्ट नहीं हो सकता। लेकिन इस आत्मा की विशेषता सेवा के उमंग उत्साह दिलाने में, योगी, सहयोगी और प्रयोगी बनाने में सदा रही है। इसलिए इस आत्मा का यह विशेष संस्कार समय प्रति समय आप सबको भी सहयोगी रहने का अनुभव कराता रहेगा। यह भी हर एक आत्मा का अपना अपना विचित्र पार्ट है।

ये पक्का समझ लो..

29/11/25

**(30.07.1983)**

# 8.3 व्यर्थ संकल्प

### 8.3.2 व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होने की विधि :

(ई) दूसरी बात, जब ज्ञान की गुह्य बातें सुनते हो अर्थात् **रेग्युलर स्टडी** करते हो, उस समय **जो प्वॉइन्टस निकलती हैं, उस हर प्वाइन्ट को सुनते हुए, अनुभवीमूर्त होकर नहीं सुनते।** ज्ञानी-तू-आत्मा हर बात के स्वरूप का अनुभव करती है। सुनना अर्थात् **उस स्वरूप के अनुभवी बन कर सुनना।** लेकिन अनुभवीमूर्त बनना बहुत कम आता है। सुनना अच्छा लगता है, गुह्य भी लगता है, खुश भी होते हैं, बहुत अच्छा ख़ज़ाना मिल रहा है, लेकिन **समाना अर्थात् स्वरूप बनना — इसका अभ्यास होना चाहिए।** मैं आत्मा निराकार हूँ— यह बार-बार सुनते हो, लेकिन निराकार स्थिति के अनुभवी बन कर सुनो। जैसी प्वॉइन्ट, वैसा अनुभव। परमधाम की बातें सुनो तो परमधाम निवासी होकर परमधाम की बातें सुनो। स्वर्गवासी देवताई स्थिति के अनुभवी बन, स्वर्ग की बातें सुनो। इसको कहा जाता है सुनना अर्थात् समाना। समाना अर्थात् स्वरूप बनना। अगर इसी रीति से मुरली सुनो, तो शुद्ध संकल्प का ख़ज़ाना जमा हो जायेगा और इसी ख़ज़ाने के अनुभव को बार-बार सुमिरण करने में सारा समय बुद्धि बिज़ी रहेगी, **व्यर्थ संकल्पों से सहज किनारा हो जायेगा। अगर अनुभवी होकर नहीं सुनते, तो बाप के** ख़ज़ाने को अपना ख़ज़ाना नहीं बनाते। इसलिए ख़ाली रहते हो अर्थात् व्यर्थ संकल्पों को स्वयं ही जगह देते हो।

imp to understand

समझा?

29/11/25



---

# अमृतवेले पिछले दिन का प्रभाव और स्वयं की चेकिंग

### 9.1 रात्रि को देर तक जागरण करना :

(अ) प्रवृत्ति वाले भी मज़े में रहते हैं ना! मूँझने वाले हो या मज़े में रहने वाले हो? ब्राह्मण-जीवन के हर सेकेण्ड में तन, मन, धन, जन का मज़ा ही मज़ा है। आराम से सोते हो, आराम से खाते हो। आराम से रहना, खाना, सोना और पढ़ना। और कुछ चाहिए क्या? **पढ़ना भी ठीक है या अमृतवेले सो जाते हो? ऐसे कई बच्चे करते हैं— सारी रात जाग रहे थे, सुबह को नींद आ गयी या एक सेवा करेंगे तो अमृतवेले को छोड़ देंगे। तो मज़ा क्या हुआ? एक्स्ट्रा जमा तो हुआ नहीं। एक तरफ सेवा की, दूसरे तरफ अमृतवेला मिस किया।** तो क्या हुआ? लेकिन नेमीनाथ मुआफिक ऐसे झुटका खाते नहीं बैठना। वह टी.वी. बहुत अच्छी होती है। जैसे वह योग के आसन करते हैं ना — अनेक प्रकार के पोज़ बदलते रहते हैं। तो यहाँ भी ऐसे हो जाते हैं। सोचते हैं – सहज योग है ना, इसलिए आराम से बैठो। कइयों की तो ट्यून भी बापदादा के पास सुनने में आती है। बापदादा के पास वह भी कैसेट है। तो अब डबल अण्डरलाइन करेंगे ना! फिर बापदादा सुनायेंगे कि रिज़ल्ट में कितना अन्तर पड़ा।

30/11/25

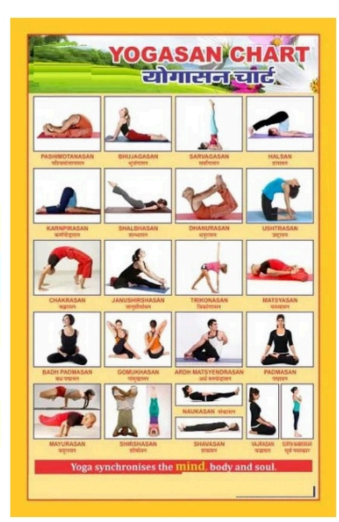

***If you want to follow Highlighted Murli***

***Then Here is the link***

TELEGRAM

WhatsApp

Result out

17-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पता नहीं पड़ेगा कि हम बेहद के बाप से यह वर्सा ले आये हैं। यह ज्ञान इस समय तुमको मिलता है तो कितना अच्छी रीति पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो गोया अपने पांव पर कुल्हाड़ा मारते हैं। चार्ट लिखते रहो तो डर रहेगा। कोई-कोई लिखते भी हैं, बाबा देखेंगे तो क्या कहेंगे। चाल-चलन में बहुत फ़र्क रहता है। तो बाप कहते हैं ग़फलत छोड़ो। नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। अपने पुरुषार्थ का फिर पिछाड़ी में साक्षात्कार जरूर होगा फिर बहुत रोना पड़ेगा। क्या कल्प-कल्प यही वर्सा मिलेगा। दास-दासी जाकर बनेंगे। आगे तो ध्यान में जाकर सुनाते थे - फलानी दासी है, यह है। फिर बाबा ने बंद कर दिया। पिछाड़ी में फिर तुम बच्चों को साक्षात्कार होंगे। साक्षात्कार बिगर सज़ा कैसे मिल सकती। कायदा ही नहीं।

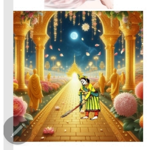

बच्चों को युक्तियां भी बहुत समझाई जाती हैं तुम

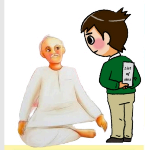

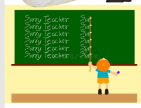

करेंगे। बाबा कहते हैं पाप किया है तो रजिस्टर में लिखो और बता दो तो तुम्हारे पाप आधा खलास हो जायेंगे। सुनाते नहीं, छिपा लेंगे तो फिर करते ही रहेंगे। श्राप मिल जाता है। न बतलाने से एक बार के बदले 100 बार करते रहेंगे। बाबा कितनी अच्छी राय देते हैं परन्तु कोई-कोई को ज़रा भी असर नहीं होता है। अपनी तकदीर को जैसे लात मारते रहते हैं। बहुत-बहुत नुकसान करते हैं। अन्त में सबको साक्षात्कार होगा। यह-यह बनेंगे, क्लास में ट्रांसफर होते हैं तो मार्क्स निकलती हैं ना। ट्रांसफर होने पहले रिजल्ट निकलती है। तुम भी अपने क्लास में जाते हो तो मार्क्स का पता पड़ेगा

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 11

Attention Please..! Wake up, 89 years lapsed..

17-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

फिर बहुत ज़ार-ज़ार रोयेंगे। फिर क्या कर सकेंगे? रिजल्ट तो निकल गई ना। जो तकदीर में था वो ले लिया। बाप सब बच्चों को सावधान करते हैं। कर्मातीत अवस्था अभी हो न सके। कर्मातीत अवस्था हो जाए तो फिर शरीर छोड़ना पड़े, अभी कुछ न कुछ विकर्म रहे हुए हैं, हिसाब-किताब है इसलिए योग पूरा नहीं लगता है। अभी कोई भी नहीं कह सकते कि हम कर्मातीत अवस्था में हैं।

Point to be Noted

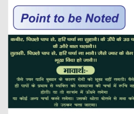

करके दिखायें। इसमें हर एक को इन्डीपिन्डेंट अपनी तकदीर ऊंच बनाने के लिए पढ़ना है। अगर श्रीमत पर नहीं चलते तो फिर इतना ऊंच पद भी नहीं पा सकेंगे। अभी पास नहीं हुए तो कल्प कल्पान्तर नहीं होंगे। तुमको सब साक्षात्कार होंगे - हम किस पद पाने के लायक हैं? अपने पद का भी साक्षात्कार करते रहेंगे। शुरू में भी साक्षात्कार

m.m.m. Imp.

Point to ponder deeply

Take it Seriously...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 7

Note it Down

Shiv भगवान उवाच:

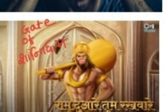

अभिमानी बनो। देह को भूल जाना है। पिछाड़ी में तुम बहुत कोशिश करने लग पड़ेंगे, अभी तुम समझते नहीं हो। पिछाड़ी में बहुत-बहुत पछतायेंगे। बाबा साक्षात्कार भी करायेंगे। यह-यह पाप किये हैं। अब खाओ सज़ा। पद भी देखो। शुरू में भी ऐसे साक्षात्कार करते थे फिर पिछाड़ी में भी साक्षात्कार करेंगे। 05/09/25

Coming Soon...

28-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Mind Very Well...

अब तो जागो....

Attention Please...!

करते थे फिर बाबा सुनाने के लिए मना कर देते थे। पिछाड़ी में सब पता पड़ेगा कि हम क्या बनेंगे फिर कुछ नहीं कर सकेंगे। कल्प-कल्पान्तर की यह हालत हो जायेगी। डबल सिरताज, डबल राज्य-भाग्य पा नहीं सकेंगे। अभी पुरुषार्थ करने की मार्जिन बहुत है, त्रेता के अन्त तक 16108 की बड़ी माला बननी है। यहाँ तुम आये ही हो नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करने। जब कम पद का साक्षात्कार होगा तो उस समय जैसे नफ़रत आने लगेगी। मुँह नीचे हो जायेगा। हमने तो कुछ भी पुरुषार्थ नहीं किया। बाबा ने कितना समझाया कि चार्ट रखो यह करो इसलिए बाबा कहते थे जो भी बच्चे आते हैं सबके फ़ोटोज़ हों। भल ग्रुप का

समजा?

अब तो जागो....